केन्द्रीय विश्वविदयालयों में शिक्षकों के पदों के सापेक्ष आरक्षित पदों का एक विश्लेषण

डॉ0 देवेन्द्र कुमार

कुछ वर्षों से आरक्षण को समाप्त करने को लेकर एक बहस छिडी हुई है इस बहस में हिस्सा लेकर प्रत्येक व्यक्ति अपने तर्क प्रस्तुत कर रहा है कोई मेरिट की बात करता है तो कोई विशेष योग्यता की बात करता है। आरक्षण को देश की तरक्की में बाधक मानते है। लेकिन वास्तविकता से परिचित होने बावजूद इस देश का बुद्धिजीवी वर्ग जानबूझकर अनजान बना हुआ है तथा दलितों को भ्रमित करने पर लगा हुआ। यदि किसी व्यक्ति के पास कोई सम्पत्ति है तो वह उसका बांटना नही चाहेगा भले उस सम्पत्ति पर किसी ओर का ही अधिकार क्यों न हो यही इस देश के अधिकतर सामान्य जाति के साथ हो रहा है। अभी तक देश के समस्त संसाधनों का प्रयोग भी यही वर्ग कर रहा है। इन संसाधनों को छोडते हुए इस उच्च वर्ग को कष्ट हो रहा है।